

संघ के सपनों से भारत का आत्मगौरव पुनः लौटेगा



वैज्ञानिक खोजें, पुरातात्विक सर्वेक्षण, प्राचीन मंदिर, स्मारक, किले, विभिन्न सामग्री और प्राचीन संस्कृति और परंपराएं सभी दर्शाती हैं कि भारत ने हजारों साल पहले सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक सभी मोर्चों पर विकास किया था। विभिन्न मंदिरों, कस्बों और किलों का निर्माण एक स्पष्ट समझ, कौशल, उन्नत प्रौद्योगिकियों, एक रचनात्मक और शोध-उन्मुख मानसिकता और एक ठोस आर्थिक नींव को प्रदर्शित करता है।

तो भारत की महिमा और वैभव का क्या हुआ ?

कई कारण हैं, लेकिन मैं केवल कुछ का ही उल्लेख करूंगा। जब हम गौरव के शिखर पर थे और दुनिया हमें सभी मोर्चों पर समाधान के लिए देख रही थी, तो हम यह मानते हुए आत्मसंतुष्ट हो गए कि अगर हमने किसी के साथ कुछ भी गलत नहीं किया है, तो कोई हमें क्यों नुकसान पहुंचाएगा ? इस मानसिकता के परिणामस्वरूप हमारे विरोधियों के इरादों के प्रति जागरूकता और सतर्कता कम हुई। आखिरकार, हमारा समाज दुश्मनों का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हुआ, भले ही उन्होंने लंबे समय तक कठिन लड़ाई लड़ी और कई लड़ाइयां जीतीं, लेकिन हमने कई लोगों की जान गंवाई, लूटे गये और सांस्कृतिक रूप से बड़ी मात्रा में नष्ट हो गए।

हम “अहिंसा परमो धर्म” और “वसुधैव कुटुम्बकम्” मंत्रों का पालन करते हैं, जिसका अर्थ है कि हम अहिंसा में विश्वास करते हैं और पूरी दुनिया को अपना परिवार मानते हैं। ये इरादे वास्तविक जीवन में आत्मसात करने लायक हैं, लेकिन अहिंसा तभी संभव है जब समाज में हर एक व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक रूप से और एक मजबूत और सही राष्ट्रीय चरित्र के विकास के लक्ष्य के साथ विकास हो। आज भी, यह स्पष्ट है कि भारत ने किसी भी देश पर हमला नहीं किया है, उनकी भूमि पर कब्जा नहीं किया है, उनके प्राकृतिक संसाधनों का शोषण नहीं किया है, उनके धार्मिक स्थलों को नष्ट नहीं किया है, या हिंदू धर्म में परिवर्तित नहीं किया है। कई देश जिनमें महान संस्कृति का अभाव है, जैसे कि सनातन संस्कृति, लालची बन जाते हैं और सामाजिक और आर्थिक मोर्चों पर मजबूत राष्ट्रों को नुकसान पहुंचाते हैं।

अहिंसा के बारे में हमारी सोच गलत हो गई और आज भी बहुत से लोग इसे पूरी तरह से नहीं समझते हैं। जब कोई देश सैन्य रूप से मजबूत होता है और एक मजबूत राष्ट्रीय चरित्र के साथ समाज मानसिक रूप से मजबूत होता है, तो दुश्मन कोई भी दुस्साहस करने से डरते हैं, जिसके परिणामस्वरूप शांति होती है ; अन्यथा, एक कमजोर सामाजिक राष्ट्रीय चरित्र वाला देश लालची शत्रुओं के आक्रमण से गुलाम राष्ट्र बन जाता है और लालची राष्ट्र ऐसे राष्ट्रों पर बेरहमी से नियंत्रण कर लेते हैं।

एक बार, एक सेना प्रमुख भगवान गौतम बुद्ध के पास आया और उन्हें शिष्य बनाने के लिए कहा क्योंकि उन्होंने बुद्ध से सात्वना पाने के लिए सब कुछ छोड़ दिया था। जब भगवान बुद्ध ने पूछा कि उन्होंने सब

कुछ क्यों छोड़ दिया, तो सेना के प्रमुख ने कहा कि एक पड़ोसी राज्य की सेना उनके राज्य पर हमला करने के लिए आ रही थी, और वह कोई रक्तपात नहीं चाहते थे, इसलिए मैंने आपके साथ जुड़ने का फैसला किया। भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया, “आपको क्या लगता है, अब दुश्मन हमला नहीं करेंगे, आपके राज्य को नष्ट करने के लिए उनके पास अधिक आत्मविश्वास और वीरता होगी क्योंकि आपकी सेना का आत्मविश्वास कम हो गया है, और अधिक रक्तपात और शोषण होगा?” आप दुश्मनों से लड़ने लायक है; भले ही युद्ध में आपकी जान चली जाए, आप अंत में मोक्ष प्राप्त करेंगे। “समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए राष्ट्र सर्वोच्च है, और राष्ट्रीय कारण के लिए अपने जीवन का बलिदान करना स्वयं और राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है” इसी अनुभूति को जागृत करना है। यह इरादा और रवैया देश को कभी नीचे नहीं गिराएगा, बल्कि देश के गौरव को गाने के लिए एक ऊंची आवाज उठाएगा।

अहिंसा का अर्थ आलसी या कमजोर होना नहीं है। अगर अहिंसा राष्ट्र को सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से नष्ट कर रही है तो उसे ठीक से नहीं समझा जा रहा है। सनातन संस्कृति पर आधारित एक मजबूत राष्ट्र कभी किसी अन्य राष्ट्र या संस्कृति पर हमला नहीं करेगा, और इस तरह हर सनातन धर्म की अवधारणा पर आधारित एक मजबूत समाज की स्थापना, अंततः समाज, राष्ट्र और दुनिया में शांति लाएगा।

अगर समाज में राष्ट्रीय चरित्र की भावना विकसित हो जाए तो भारत की आंतरिक तोड़ने वाली ताकतों को भी वश में कर लिया जाएगा। तभी हम अपने वैभव को पुनः प्राप्त करने और “विश्वगुरु” बनने में सक्षम होंगे।

हमारी पीड़ा के लिए जिम्मेदार एक और कारण है, पश्चिमी और मुगलों ने समाज को तोड़ने के लिए जाति-आधारित विभाजन की रणनीति का इस्तेमाल किया, जिनमें से एक झूठ आर्य आक्रमण सिद्धांत था। यद्यपि उन्होंने झूठे सिद्धांत बनाए, हम भारतीय भी दोषी थे क्योंकि हम एक दुर्भावनापूर्ण इरादे में फंस गए और जाति विभाजन में कुछ हद तक लिप्त हो गए। जाति व्यवस्था ने हमारे हितों को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया; हमने दुश्मनों के खिलाफ युद्धों में कई जानें गंवाईं क्योंकि हमने अपनी एकता खो दी थी। धर्मांतरण और सांस्कृतिक स्थलों को बड़े पैमाने पर नष्ट कर दिया गया।

सबसे महत्वपूर्ण कारक सामाजिक समरसता लाना है, जिसके बिना सनातन धर्म के बैनर तले सभी को एक साथ लाना असंभव है। हमें उन ताकतों के खिलाफ एक साथ लड़ना होगा जो अभी भी जाति के आधार पर समाज को विभाजित करने का प्रयास कर रही हैं ताकि उन्हें धार्मिक रूप से परिवर्तित किया जा सके।

थॉमस मैकाले ने एक अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की स्थापना करके सनातन संस्कृति को और नुकसान पहुंचाया, जिसने हर सनातन की आंतरिक इंजीनियरिंग को नुकसान पहुंचाया, जो जीवन, कार्य और राष्ट्र के सभी पहलुओं में विकास का स्रोत था।

यह हमारी अपनी पुरानी शिक्षा प्रणाली को फिर से शुरू करने का समय है, जो प्राचीन और आधुनिक ज्ञान और तकनीकों को जोड़ती है।

डॉक्टर हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शुरुआत प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्रीय चरित्र को स्थापित

करने के लक्ष्य के साथ की ताकि हमारा देश फिर कभी विदेशी शासन के अधीन न हो और एक बार फिर सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक दृष्टि से दुनिया का नेतृत्व कर सके।

संपर्क

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

7875212161

